ISSN No. : 2394-0344 Remarking : Vol-2* Issue-3*August 2015

गाँधी जी के सामाजिक व राजनीतिक दर्शन में अहिंसक प्रतिरोध की प्रभावकारिता

जितेन्द्र सिंह
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
एम.एस.जे. कॉलेज,
भरतपुर

सारांश

अहिंसा के सिद्धान्त को गाधी जी से पहले महावीर स्वामी, बुद्ध, ईसा–मसीह आदि ने अपने विचारों में प्रतिपादित किया। विश्व के सभी धर्मों व धर्म ग्रन्थों में अहिंसा के महत्व को स्वीकार किया गया है। गाधी जी अहिंसा के लिए ''गीता'' से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने अहिंसा की उच्चता व शुद्धता के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा कि अहिंसा की पालना मन, वचन व कर्म तीनों से ही करनी चाहिए। यह आत्मसंयम, आत्मशुद्धि द्वारा ही संभव है। गाधी जी ने कहा है कि अहिंसा के आदर्श की प्राप्ति व्यक्तिगत आचरण में ही नहीं, अपितु सामाजिक व राजनीतिक व्यवहार में भी की जानी चाहिए। गाधी जी की मान्यता थी कि एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था अहिंसा पर ही आधारित हो सकती है, अहिंसा के बिना किसी संगठित सामाजिक व्यवस्था की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

मुख्य शब्द : अहिंसा, उपनिषद, पुराण, गीता, रामायण निष्क्रिय, आत्मविश्वास, आत्मसंयम, सामाजिक व्यवस्था।

प्रस्तावना

अहिंसा का सिद्धान्त कोई नवीन सिद्धान्त नहीं है। गाँधी जी से पूर्व अनेक महान विभूतियों जैसे– महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, ईसा–मसीह आदि ने अहिंसा के आदर्श को प्रतिपादित किया था। विश्व के समस्त धर्मों में अहिंसा के आदर्श को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। उपनिषद, मनुस्मृति, पुराण, गीता, रामायण आदि ग्रन्थों में अहिंसा के महत्त्व को स्वीकार किया गया है।

गाँधी जी गीता को अपने जीवन का 'आध्यात्मिक संदर्भ ग्रन्थ' (Spritual Reference Book) मानते थे । सत्य और अहिंसा के बारे में गाँधी जी ने गीता से बहुत कुछ सीखा । गाँधी जी गीता के इस श्लोक से बहुत प्रभावित हुए –

अहिंसा परमो धर्मः अहिंसा परमं तपः।
अहिंसा परमं सत्यम्, ततो धर्मः प्रवर्तते।।

अर्थात् अहिंसा सर्वोच्च धर्म है, सर्वोच्च तप है, सबसे बड़ा सत्य है जिससे समस्त कर्त्तव्यों का उद्भव होता है ।

अहिंसा का अर्थ

गाँधी जी की अहिंसा सम्बन्धी विचारधारा किसी संकुचित दायरे म कैद नहीं हैं। अहिंसा के महत्त्व व प्रभाव को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी कहते हैं ''अहिंसा संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। यह सत्य से साक्षात्कार करने का सबसे अचूक उपाय है और इसी उपाय से उसे सबसे जल्दी प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि कोई और उपाय है ही नही। अहिंसा अपना काम इतनी खामोशी से करती है कि उसके प्रभाव का प्रायः पता ही नहीं चलता, लेकिन उसका काम निश्चित रूप से जारी रहता है। हमारे चारों ओर निरन्तर चलने वाली विनाशलीला के बीच प्रकृति की एक यही प्रक्रिया है जो रचनात्मक है।''

अहिंसा और हिंसा में जो सूक्ष्म भेद हैं तथा मानव पर पड़ने वाले उनके प्रभावों को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी ने कहा है, ''किसी को गाली देना, बुरी तरह पेश आना, झूठ बोलना, किसी को चोट पहुचाना या खून करना ये हिंसा भाव की निशानी है, उसी तरह शिष्टता, सौजन्य, सच्चाई आदि अहिंसा के भाव के प्रतीक हैं। अहिंसात्मक तरीकों से जो दबाव डाला जाता है वह उस दबाव से कहीं अधिक प्रभावशाली होता है जो हिंसात्मक तरीके से डाला जा सकता है।'' अहिंसा की गूढता एवं उसक विस्तृत स्वरूप पर अपना विचार प्रकट करते हुए इनका कहना है कि– ''अहिंसा एक मानसिक स्थिति है जो इस स्थिति को नहीं पा सका वह चाहे कितनी ही चीजों को त्याग दे तो भी उसे उसका फल शायद ही मिल सकेगा। अहिंसा क्षत्रिय का गुण है। कायर उसका पालन कर ही नहीं सकता। दया तो शूरवीर ही दिखा सकते हैं। अहिंसामय होने का अर्थ है विरोधियों के प्रति भी प्रेमभाव रखना, अपकारी का

भी उपकार करना, बुराइयों का बदला भलाई से देना और ऐसा करते हुए यह मानना कि यह कोई अनोखी बात नहीं है। यह तो हमारा कर्त्तव्य है।''

अहिंसा को एक निश्चित सिद्धान्त या आदर्श के रूप में प्रतिपादित नहीं किया जा सकता अपितु यह एक व्यावहारिक ज्ञान है जिसको मनुष्य अपने जीवन के प्रत्येक क्षण एवं परिस्थितियों में अपना सकता है। गाँधी जी कहते हैं कि– ''अहिंसा कोई जड़ सिद्धान्त नहीं है, वह हमारी अपनी आत्मा से सम्बन्धित निजी मामला है।''

किसी के दबाव में आकर अथवा बलपूर्वक किसी से अहिंसा व्रत का पालन नहीं करवाया जा सकता । यह तो मन से उठने वाले भावों पर निर्भर करती है। इसी को स्पष्ट करते हुये गाँधी जी ने कहा कि– ''जो मनुष्य स्वेच्छा और प्रेम भाव से प्रेरित होकर किसी की हिंसा नहीं करता, वही अहिंसा धर्म का पालन करता है।'' अहिंसा कोई मानसिक अथवा बौद्धिक प्रवृत्ति नहीं होती वरन् यह मूलतः आत्मा का गुण है, निर्भय व्यक्ति ही सच्चा अहिंसक हो सकता है। जहॉ सुख–दुख, दया, ममता का कोई स्थान नहीं होता वहां अहिंसा नहीं टिक सकती है।

अहिंसा के सिद्धान्त को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी कहते हैं कि–''अहिंसा एक उच्चतम कोटि का क्रियाशील सिद्धान्त है। यह आत्मिक बल हमारे भीतर स्थित ईश्वरत्व की शक्ति है। हम जिस हद तक अहिंसा को अपना लेंगे उस हद तक हम ईश्वर जैसे होंगे, किन्तु हम पूरी तरह भगवान नही बन सकते।''

अन्त में कहा जा सकता है कि अहिंसा कोई निष्क्रिय गुण नहीं है अपितु ईश्वर ने मनुष्य को जितनी तरह की शक्तिया दी हैं, उनमें यह सबसे प्रबल है। मनुष्य की अहिंसा ही मनुष्य को पशु से भिन्न करती ह। यह गुण प्रत्येक मनुष्य में विद्यमान होता है, अतः हमें इसको जागृत करने की आवश्यकता है तभी देश व समाज का उत्थान संभव है। अहिंसक व्यक्ति वही होता है जो विषम परिस्थितिया आने पर प्रहार करने की क्षमता रखते हुए भी अहिंसक बना रहता है। सच्चे अहिंसक को किसी आडम्बर या प्रचार की आवश्यकता नहीं पड़ती वरन् केवल आत्मविश्वास, आत्मसंयम की आवश्यकता पड़ती है। यह आत्मसंयम, आत्मशुद्धि द्वारा ही संभव होता है। अहिंसा का पालन न केवल मनुष्य को नवजीवन प्रदान करता है अपितु उसे पूर्णतः बदल डालता है ।

अहिंसा के सामाजिक व राजनीतिक आयाम

गाँधी जी के अनुसार अहिंसा केवल व्यक्ति का सद्गुण नहीं, अपितु यह जीवन का सर्वोच्च नियम है। अतः अहिंसा के आदर्श की प्राप्ति व्यक्तिगत आचरण में ही नहीं, अपितु सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार और व्यवस्था में भी की जा सकती है। उनका कथन था कि अहिंसा के आदर्श को, व्यक्तिगत सद्गुण तक सीमित रखना, उसकी व्यापक और रचनात्मक शक्ति का अवमूल्यन होगा। उनके अनुसार अहिंसा व्यक्तिगत सद्गुण भी है और एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था का विश्वसनीय आधार भी ।

गाँधी जी की दृढ़ मान्यता थी कि एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था अहिंसा पर ही आधारित हो सकती है, क्योंकि अहिंसा के बिना किसी संगठित सामाजिक व्यवस्था की कल्पना ही नहीं की जा सकती। जब गाँधी जी के समक्ष एक बार यह शंका उपस्थित की गई कि क्या अहिंसा के आधार पर समाज को संगठित किया जाना संभव है? गाँधी जी ने तत्काल प्रतिप्रश्न किया कि क्या हिंसा के आधार पर किसी सभ्य और संगठित, सामाजिक व्यवस्था की कल्पना किया जाना संभव है? गाँधी जी ने दृढ़तापूर्वक कहा है कि यदि मनुष्य प्रकृति से ही अहिंसक न होता तो सदियों पूर्व ही मानव समुदाय का विनाश हो गया होता।

गाँधी जी ने कहा है कि व्यक्तिगत आचरण के सिद्धान्त के रूप में तो अहिंसा के महत्व को सदैव से ही स्वीकार किया जाता रहा है। उन्होंने दावा किया कि अहिंसा के संदर्भ में उनका मौलिक योगदान ही यह है कि उन्होंने इसे सामाजिक और राजनीतिक आचरण तथा व्यवस्था की प्रेरक व आधारभूत शक्ति के रूप में रूपान्तरित कर दिया है। उन्होंने कहा ''मैंने एक नई पद्धति का प्रारम्भ किया है। यदि अहिंसा एक व्यक्ति तक सीमित है तो वह सर्वोच्च धर्म नहीं बन सकती । मैं कभी भी ऐसे व्यक्ति की पूजा नहीं कर सकता जो किसी एकान्त गुफा में बैठकर अहिंसा की साधना करता है। ऐसी अहिंसा की कोई उपयोगिता नहीं है। मैं उस अहिंसा में विश्वास करता हूॅ जो व्यावहारिक वास्तविकताओं के संसार में घटित की जाती है। अहिंसा के माध्यम से व्यक्ति की ऐसी मुक्ति में मेरी कोई आस्था नहीं है जो संसार से पलायन करने से प्राप्त होती है''

गाँधी जी ने इस बात पर बल दिया कि अहिंसा की वास्तविक अभिव्यक्ति, लोगों की निःस्वार्थ सेवा के रूप में होती है। इस प्रकार सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अहिंसा के सिद्धान्त को प्रयुक्त करने का अर्थ होगा, हर प्रकार के अन्याय, दमन, शोषण और उत्पीड़न का निजी और सामूहिक रूप से प्रतिकार। गाँधी जी के अनुसार– ''अहिंसा की उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति, एक दोषमुक्त सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के संकल्प के रूप में होती है।''

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. महात्मा गाँधी– आत्म कथा
2. गाँधी चिन्तन– डा0 शैलबाला शर्मा
3. राजनीति विचार धाराएॅ समाजवाद से सर्वोदय तक–डा0 धर्म नारायण मिश्र,स्वतन्त्र प्रकाशन, अजमेर
4. आधुनिक राजनीतिक विचारधारा डा0 गंगादत्त तिवारी– मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. गाँधी दर्शन : विविध आयाम– अलका अग्रवाल, शिखा अग्रवाल
6. हिन्द स्वराज– गाँधी जी
7. गाँधी दर्शन मीमांसा– बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
8. गाँधी चिन्तन में सर्वोदय– आर. के. झा
9. भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष– विपिन चन्द्र
10. गाँधी एक राजनीतिक अध्ययन– आचार्य कृपलानी
11. गाँधी की प्रासंगिकता– जे. डी. सेठी